Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

उदयपुर के शैव मतावलम्बीय पर्यटन स्थल

डॉ. मनोज दाधीच* कविता विश्नोई **

*** सहायक आचार्य (इतिहास) पेसिफिक सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, PAHER विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत**
**** शोधार्थी (इतिहास) पेसिफिक सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, PAHER विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत**

प्रस्तावना – राजस्थान राज्य के दक्षिण–मध्य भाग में अवस्थित मेवाड़ रियासत जिसे पूर्वकाल में उदयपुर राज्य और चित्तौड़गढ़ राज्य के नाम से सम्बोधित किया जाता था में आधुनिक राजस्थान के उदयपुर राजसमंद, चित्तौड़ और भीलवाड़ा जिले समाहित है। मेवाड़ रियासत को दीर्घ अवधि तक गुहिल और सिसोदिया राजवंश के शासकों ने शासित किया था।[1] मेवाड़ का धार्मिक परिदृश्य प्राचीनकाल से ही वैविध्यपूर्ण और समृद्ध रहा है। इस रियासत में हिन्दू जैन और बौद्ध धर्म का व्यापक प्रभाव रहा है। इस रियासत के आराध्य दवों में भगवान शिव और विष्णु को प्रमुखता प्राप्त है। यहाँ ही वैविध्यपूर्ण धार्मिक संस्कृति, समृद्ध, गौरवशाली और जीवंत परम्पराओं की साक्षी रही है। यहाँ के महाराणाओं ने धर्म और धार्मिक प्रभावों के सरंक्षण और संवर्द्धन में महत्तवपूर्ण भूमिका निभाई है।

धर्म समाज में व्याप्त सामाजिक, सांस्कृतिक परम्पराओं और प्रणालियों की एक विस्तृत श्रृंखला है। जिसमें विश्वास, आस्था, नैतिकता, पवित्रता, व्यवहार, प्रथाएँ और भविष्यवाणियों को उल्लेखनीय स्थान प्राप्त होता है। जो सामान्य रूप से मानव समुदाय और मानवता का अलौकिक पारलौकिक और आध्यात्मिक तत्वों से परिचित करता है।[2] यद्यपि इसके अर्थ स्वरूप पर विद्धान एक मत नहीं है, तथापि स्वीकार किया जाता है कि धर्म मानव जीवन का सर्वव्याप्त वर्तमान और भविष्य है। यह ईश्वर और आत्मा–अन्तर मत और प्राणी के मध्य शाश्वत संबंध के रूप में सदैव विद्यमान रहता है।[3] सारव्य दर्शन के अनुसार अज्ञान से ज्ञान, विवेक से धर्म का प्रार्दुभाव होता है। सामान्य शब्दों में धर्म ही मानव जीवन का आधार है। मेवाड़ रियासत में प्राचीनकाल से ही धर्म की समृद्ध परम्परा और विरासत अक्षुण्ण रही है। मेवाड़ रियासत की विशेषता यहाँ हिन्दु जैन बौद्ध और मुस्लिम धर्म के मध्य स्थित अर्न्तसंबंध है। जो प्राचीन से अर्वाचीन युग तक एक–दूसरे के साथ सह–अस्तित्व के रूप में परिलक्षित होता है। मेवाड़ की धार्मिक संस्कृति और स्वरूप का प्रारम्भ 6वीं शताब्दी में गुहिलोत राजवंश से प्रारम्भ माना जाता है।[4]

शैव धर्म की उत्पत्ति और मेवाड़ – भगवान शिव जिन्हें हिन्दु धर्म की मान्यताओं में त्रिदेवों के एक देव के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हैं, हिन्दु धर्म के प्राचीनतम देवताओं में सम्मिलित माने जाते हैं।[5] जहाँ ब्रह्मा को सृष्टि का रचियता, विष्णु संचालक माने जाते है, वहीं शिव (महेश) को उसका संहारक स्वीकार किया गया है। शिव को वैदिक साहित्य में रूद्र तो तंत्र साधनाओं में भैरव के नाम से प्रतिष्ठा प्राप्त है।[6] वर्तमान जगत उन्हें महादेव, भोलेनाथ, नीलकंठ, आशुतोष, महेश, महाकाल, कपाली, रामेश्वर, रूद्र और गंगाधर जैसे नामों से सम्बोधित करता है। शास्त्रों में शिव अपने रौद्र स्वरूप और सौरभ आकृति के लिए प्रसिद्धि प्राप्त है। शिव का अर्थ कल्याणकारी स्वरूप से सम्बोधित है तथापि उन्हें लय और प्रलय के देवता के रूप में स्वीकार किया जाता है। रूद्राष्टाध्यायी के पंचम् सर्ग में आशुतोष के विविध स्वरूपों का वर्णन विस्तारपूर्वक प्राप्त होता है।[7]

हिन्दु धर्म की सांस्कृतिक–धार्मिक परम्पराओं में शिव सम्प्रदाय अथवा शैव धर्म आशुतोष भगवान शिव के पूजा–विधान की एक परम्परा है। जिसका इतिहास मूल रूप से प्राचीनकाल के पूजा अनुष्ठानों से जुड़ा हुआ है। प्राचीन भारतीय हड़प्पा सभ्यता में शिव लिंग पूजा के प्रमाण प्राप्त होते हैं। वहीं वेदों में शिव को रूद्र के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। गुप्तकाल में भी शैव मत से सम्बन्धित विभिन्न देवालयों के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। कालान्तर में यह सम्प्रदाय अनेक वर्गों में विभाजित होता गया जिनमें पाशुपत शैव, कश्मीरी शैव और नाथ सम्प्रदाय के नाम प्रमुखता से लिए जाते हैं। इस सम्प्रदाय में योग मंत्र साधना और ध्यान को विशेष स्थान प्राप्त है। शिवत्व की प्राप्ति इस सम्प्रदाय में जीवन का पवित्र लक्ष्य स्वीकार किया जाता है। यह सम्प्रदाय मूलरूप से एकेश्वरवाद, मुक्तीमार्गी, प्रतीक पूजा और साधु परम्पराओं में विश्वास करता है। मूल रूप से भगवान आशुतोष शिव तथा उनके अवतार स्वरूपों में श्रृद्धा रखने वालों और शिव की पूजा करने वालों को शैव कहा जाता है।[8] हर्ष चरित्र में कहा गया है कि 'गृहे–गृहे अपूज्यत भगवान खण्डपरशु अर्थात् प्रत्येक घर में शिव की पूजा की जाती है। राजपूत युग में शैव धर्म समाज में विशेष रूप से लोकप्रिय और प्रतिष्ठित रहा। जिसकी पुष्टि तत्कालिन साहित्य और अभिलेखों से होती है। कई राजपूत शासक भगवान शिव के अनन्य उपासक थे, जिसमें मेवाड़ रियासत का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। यहाँ के शासकों द्धारा शिव देवालयों का निर्माण भव्यता और प्रमुखता से करवाया गया था, जिनके प्रमाण आज भी अस्तित्व में है।

डॉ. रामधारी सिंह दीनकर के अनुसार, 'शैव सिद्धान्त में सृष्टि के परम् अध्यक्ष का नाम शिव है। वे ही चेतना के आधार और ब्रह्माण्ड में व्याप्त अनादि सत्य है। उनकी कृपा सृष्टि की पाँच प्रक्रियाओं में परिलक्षित होती है। जो सृष्टि की रचना, पालन और संहार जीव माहोच्छन्न और मुक्ति से सम्बन्धित है। शिव अपने समस्त कार्य अपनी सृष्टि के माध्यम से सम्पन्न करते हैं।'[9]

मेवाड़ में शैव सम्प्रदाय का विकास – प्राचीनयुग से ही मेवाड़ रियासत में वैदिक, बौद्ध और जैन धर्म के प्रचार–प्रसार के प्रमाण प्राप्त होते है। मेवाड़ का प्रदेश प्रकृति से सम्पन्न होने एवं अरावली पर्वतमाला की प्राचीनतम

अवस्थिति के कारण यहाँ के जनमानस को प्रकृति उपासना के लिए सदैव प्रेरित करता रहा है। फलस्वरूप थल, जल और नभ के प्रति आश्चर्य और जिज्ञासापूर्ण आस्था विश्वास और स्नेह का माध्यम इनकी पूजा उपासना और धार्मिक अनुष्ठान का उल्लेखनीय कारण बना। जिससे यहाँ के जनजीवन में लौकिक आध्यात्म के भाव लौकिक धर्म का साधन और साधना के स्वरूप से दृष्टिगत होने लगा। जो आज भी मेवाड़ परिक्षेत्र में प्रचलित प्रकृति पूजन में परिलक्षित होता है। यह एक प्रकार से मातृ-पूजन (पोषण आस्था) का सूचक है।

मेवाड़ परिक्षेत्र में आदिदेव महादेव और उसकी शक्ति का पूजन मातृशक्ति के रूप में उदित हुआ था। इतिहास में इसका प्रथम उल्लेख 483 ई. के छोटी सादड़ी के लेख में अर्द्धनारीश्वर के रूप में प्राप्त होता है। लेख से ज्ञात होता है कि मेवाड़ क्षेत्र में धर्म का प्रारम्भ शिव तथा शक्ति के माध्यम को धारण किये हुआ था। इसका प्राचीनतम रूवरूप शिवलिंग और जलधारी को धारण किये दिखाई देता है। इस रियासत के आराध्य देव श्री एकलिंग जी को माना जाता रहा है। यहाँ शैव मत के पाशुपत दर्शन के लकुलीश-सम्प्रदाय का विकास उल्लेखनीय रूप से हुआ था। इसके अन्य केन्द्रों में चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित मेनाल का नाम उल्लेखनीय रूप से लिया जाता है।[10] मेवाड़ का प्राचीन नाम शिवि जनपद हुआ करता था। नवीं और आठवीं शताब्दी के पुरातात्विक प्रमाण यहाँ शिव पूजा की प्राचीनता के परिचायक है।[11] मेवाड़ के शासक स्वयं को शैव पूजक स्वीकार करते रहे है। उदयपुर से 18 किलोमीटर दूर स्थित कैलाशपुरी क्षेत्र यहाँ के शैव मतावलम्बियों का प्रमुख केन्द्र है। जो एकलिंगेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है।[12] मेवाड़ रियासत के शासक श्री एकलिंग जी को अपना महाराणा और स्वयं को उनका दीवान मानते आये है।[13] मेवाड़ में शैव सम्प्रदाय का पाशुपात सम्प्रदाय अधिक विकसित हुआ। इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक लकुलीश को माना जाता है, जो भगवान शिव के 28 वें तथा अन्तिम अवतार के रूप में स्वीकार किये जाते हैं। मेवाड़ के हरित ऋषि इसी सम्प्रदाय से सम्बन्धित स्वीकार किये जाते हैं। मेवाड़ रियासत में स्थित एकलिंगनाथ जी का मन्दिर जिसका निर्माता बप्पारावल को माना जाता है, इस सम्प्रदाय का मुख्य मन्दिर है।[14]

मेवाड़ के प्रमुख शैव मतावलम्बीय पर्यटन स्थल – मेवाड़ के जनजीवन में धर्म का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यहाँ के शासक धर्म की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग करने को सदैव तत्पर रहे हैं। मेवाड़ परिक्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना प्राचीन युग से विद्यमान रही है। 8 से 12वीं शताब्दी तक इस क्षेत्र में ब्रह्मा और सूर्य की उपासना भी लोकप्रिय थी किन्तु बाद के काल में यहाँ शिव, शक्ति, विष्णु और विष्णु के अवतारों के रूप में राम-कृष्ण की पूजा और भक्ति साधना का प्रचलन भी प्रारम्भ हुआ। मेवाड़ परिक्षेत्र में शिव का पूजन अर्द्धनारीश्वर स्वरूप में किया जाता रहा है। यहाँ शैव सम्प्रदाय के लकुलीश और पाशुपत सम्प्रदाय अत्यन्त लोकप्रिय रहे।[15]

एकलिंग जी का मंदिर – उदयपुर शहर से लगभग 20 किलोमीटर दूर मेवाड़ महाराणाओं के इष्टदेव एकलिंग जी का धार्मिक स्थल दो पहाड़ियों के मध्य कैलाशपुरी ग्राम में अवस्थित है। इसे शैव सम्प्रदाय के अनुसार लकुलीश मंदिर के रूप में मान्यता प्राप्त है। आठवीं शताब्दी में इस महादेव मंदिर का निर्माण मेवाड़ के तात्कालिन शासक बप्पा रावल द्वारा करवाया गया था। इस मंदिर के चारों और सुदृढ़ प्राचीर और स्थापत्य शिल्प की सुन्दर कारीगरी से युक्त परकोटे का निर्माण महाराणा मोकल के शासनकाल में करवाया गया था। जबकि महाराणा रायमल के समय इस मंदिर ने अपना वर्तमान स्वरूप ग्रहण किया था। मंदिर के गर्भगृह में श्वेत रंग के पाषाण से निर्मित भगवान आशुतोष श्री एकलिंगनाथ की चर्तुमुखी प्रतिभा शोभायमान है। गर्भगृह के बाहर स्थित दो पाषाण पट्टिकाऐं एकलिंग और सहायक देवताओं की सुन्दर आकृतियों से सुसज्जित है। यहाँ बनी विविध आलों (तबारियों) में विविध हिन्दु देवी-देवताओं की प्रतिमाऐं अवस्थित है, जिनमें गणेश, शिव, विष्णु, ब्रह्मा, कार्तिकेय आदि के नाम उल्लेखनीय है। एकलिंग जी मंदिर के परिसर में कई छोटे-बड़े हिन्दु धर्म के अन्य देवालय भी अवस्थित है, जिनमें महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित विष्णु मंदिर उल्लेखनीय है, जिसे स्थानीय लोग मीराबाई का मंदिर नाम से भी सम्बोधित करते है। मान्यता है कि राजस्थान में यह मंदिर पाशुपत सम्प्रदाय का एक मात्र स्थान है।[16]

भगवान एकलिंगनाथ का यह मंदिर मेवाउ में धार्मिक ऐतिहासिक, राजनैतिक, प्राकृतिक और नैसर्गिक दृश्यों के कारण पर्यटन की दृष्टि से उल्लेखनीय है। मेवाड़ परिक्षेत्र के पौराणिक ग्रंथों में मंदिर के निर्माण और इतिहास से सम्बन्धित कई रोचक कथाओं के वृत्ताान्त मिलते है। यह मंदिर शिखबन्ध, सुदृढ़, सुन्दर, श्वेत पाषाण से निर्मित है, यहाँ की प्राचीन लिंगाकार प्रतिमा यवनों के आक्रमणों के समय इन्द्रसरोवर में विसर्जित कर दी गई थी। तत्पश्चात् यहाँ काले संगमरमर की चतुमुर्खी प्रतिमा की स्थापना की गई जो वर्तमान तक अस्तित्व में है। इस प्रतिमा के चतुर्मुखी स्वरूप का पूजन पूर्व में सूर्य, पश्चिम में ब्रह्म दक्षिण में रूद्र (भैरव) और उत्तार में विष्णु स्वरूप मानकर किया जाता है। मंदिर के गर्भगृह के चार द्वार चारों दिशाओं में अवस्थित है।[17]

मंदिर के पूर्वी प्रवेश द्वार के निकट गर्भगृह में पार्वती, गणेश, कार्तिकेय और गंगा माता की प्रतिमाऐं स्थित है। मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार रजत (चाँदी) से निर्मित है, जिस पर सुन्दर नक्काशी का बेलबुटेदार कार्य परिलक्षित होता है। प्रवेश द्वार के दोनों ओर पितृ भक्ति का आदर्श स्थापित करते हुए भगवान गणेश और कार्तिकेय हाथों में चंवर लिए हुए प्रतिमाओं के रूप में अंकित है। गर्भगृह के बाहर एक बड़ा सभामण्डप बना हुआ है यहीं से पर्यटक और श्रृद्धालु आशुतोष भगवान एकलिंग जी के दर्शन करते है। सभा मण्डप में मध्य भाग में रजत, पीतल और पाषाण निर्मित तीन नन्दकेश्वर प्रतिमान क्रम से बनी हुई है।[18]

मंदिर के बाहर की ओर दक्षिण द्वार के निकट कुछ ऊपरी भाग में माता, अम्बिका, कालिका और गणेश के वि.सं. 1890 में निर्मित देवालय अवस्थित है। मंदिर परिसर में छोटे-बड़े लगभग 70 देवालय स्थित है। मंदिर के पिछले भाग में मेवाउ के प्रमुख ऋषि हारित की गुफा और प्रतिमा स्थित है। जिसके निकट ही विन्धवासिनी देवी और भैरवनाथ की प्रतिमाऐं दर्शनीय है।[19]

एकलिंग जी मंदिर से कुछ दूरी पर पहाड़ी के ऊपरी भाग में नैत्रय कोण में बाघेला सरोवर, बाघसिंह का स्मारक और अतिप्राचीन विष्णु और शिव के देवालय स्थित है, जो दर्शनीय है। यही निकट स्थित एक जैन देवालय जिसे अद्भुतनाथ जी (अदबदनाथ) के नाम से सम्बोधित किया जाता है, पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। यह मंदिर ओसवाल सारंग द्वारा महाराणा कुम्भा के शासनकाल 1437 ई. में बनवाया गया था। जिसमें 16वें तीर्थंकर शान्तिनाथ जी की नौ फीट ऊँची प्रतिमा अवस्थित है। इसके निकट ही खुमाण रावल के देवरे के नाम से एक अन्य स्मारक बना है जो ध्वत स्थिति में है। इसकी तक्षण कला पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। इस प्रकार

कैलाशपुरी क्षेत्र (मेवाड़) में अवस्थित एकलिंग जी मंदिर अतिप्राचीन अद्भुत स्थापत्य शिल्प और नैसिर्गिक सुन्दरता से युक्त है जो पर्यटकों के साथ-साथ इतिहास प्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित करता है।[20]

उभयेश्वर महादेव मंदिर – अरावली पर्वत श्रृंखला में स्थित यह प्राचीन शिव मंदिर जिसे मेवाड़ का बद्री विशाल नाम से सम्बोधित किया जाता है, गोगुन्दा गाँव से 20 मील दक्षिणपूर्व और कमलनाथ से उत्तारपूर्व दिशा में 20 मील की दूरी पर स्थित है। यह मंदिर उदयपुर जिले की धार पंचायत समिति का प्रमुख पर्यटन स्थल है। जिसकी उदयपुर जिले से अनुमानित दूरी 25 किलोमीटर है। नैसर्गिक सौन्दर्य और प्राकृतिक रमणीयता के मध्य स्थित श्री उभयेश्वर महादेव मंदिर का शिवलिंग स्वयंभू माना जाता है। यह मंदिर और इसमें प्रतिष्ठित प्रतिमा पाँच स्थानों से खण्डित है। मेवाड़ परिक्षेत्र के शिव मंदिरों में यह एक ऐसा मंदिर है, यहाँ खण्डित शिवलिंग की पूजा अर्चना श्रृद्धा के साथ की जाती है। यहाँ स्थित एक फिट की ऊँचाई लिए यह लिंग मध्यवर्ती भाग से खण्डित अवस्था में है। इसके खण्डित होने के पीछे क्षेत्रीय मान्यता है कि मुगल आक्रमण के समय मेवाड़ महाराणा द्वारा उभयेश्वर महादेव से रक्षार्थ प्रार्थना की गई थी, जिसमें शिव के चमत्कार से शिवलिंग के मध्यवर्ती भाग से हजारों की संख्या में भँवर निकले फलत: मुगल सेना भँवरों के आतंक से त्रस्त होकर अपना अस्त्र-शस्त्र रसद छोड़कर भाग गई। मंदिर से लगभग 200 मीटर की दूरी पर सुन्दर सरोवर और झरना विद्यमान है, जो पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है। पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण इस सरोवर में वर्ष पर्यन्त जल भरा रहता है।[21]

इस मंदिर के सम्पूर्ण विकास का दायित्व मुनिदाता को समर्पित था। कुछ समय पूर्व इसके विकास का उत्तारदायित्व मेवाड़ कॉम्पलेक्स द्वारा ले लिया गया था। जिसने इस स्थल के पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में पहल करते हुए यहाँ माता वैष्णोदेवी का मंदिर निर्मित करवाया, जिससे उभयेश्वर मंदिर सहित माता का मंदिर भी मेवाड़ का प्रमुख धार्मिक और पर्यटक स्थल बन गया। यहाँ वर्ष पर्यन्त देशी-विदेशी पर्यटकों की आवाजाही बनी रहती है।[22]

वैद्यनाथ मंदिर (सीसारमा) – उदयपुर के निकट स्थित सीसारमा गाँव में भगवान वैद्यनाथ महादेव का पंचायतन शैली में बने मंदिर का निर्माण महाराणा संग्राम सिंह की माता श्री देवकुमारी द्वारा करवाया गया। इस मंदिर की प्रतिष्ठा 6 जनवरी, 1716 ई. को सम्पन्न हुई थी। यह मंदिर 3 से 4 फिट ऊँचे वृत्ताकार आंगन पर स्थित है। मंदिर के ऊर्ध्वाकार निर्माणों में शास्त्रों में वर्णित स्थापत्य शिल्प के नियम-विधानों का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है। यहाँ के ऊर्ध्वाकार निर्माणों में जंघा, प्रहारस्तर, कपोतावली, मंजरी, शिखर, विस्तृत आमलकसार लघु आमलकसार, कलशाण्डक, ध्वजादण्ड, घंटिया त्रिशुल और ध्वजा निर्मित है। सभामण्डप के अग्रभाग पर स्तम्भ युक्त परिसज्जा के साथ-साथ नृत्यमण्डली प्रदर्शित करती प्रतिमाऐं प्रदर्शित की गई है जो स्थापत्य शिल्प की अनूठी विरासत है। गर्भगृह के मध्य भाग में चर्तुमुखी शिवलिंग प्रतिष्ठित है। गर्भगृह की छत वृत्ताकार आकृति लिये हुए है। मंदिर के प्रवेशद्धार पर सिंह मुख की आकृतियाँ अवस्थित है। इसके स्तम्भों पर बेलबुटियाँ, देवी-देवता, द्धारपाल, पुष्प स्वास्तिक जैसी कई आकृतियाँ निर्मित है। इस पंचायतन शैली में निर्मित मंदिर में शिव परिवार, ब्रह्मा, भैरव और लक्ष्मीनारायण भगवान की प्रतिमाऐं प्रतिष्ठित है। देवालय के बाहरी हिस्से में बना तोरणयुक्त तुलादान स्थल अत्यन्त सुन्दर शिल्प कला को प्रदर्शित करता है। मंदिर के बाहर के आंगन में एक सुन्दर कुण्ड भी विद्यमान है।[23]

गुप्तेश्वर महादेव मंदिर – राजस्थान के मेवाड़ परिक्षेत्र में जहाँ कहा जाता है कि यहाँ का कंकर-कंकर शंकर है में स्थित तितरड़ी गाँव में उदयपुर के अमरनाथ के नाम से सम्बोधित किया जाने वाला श्री गुप्तेश्वर महादेव मंदिर अरावली पर्वत श्रृंखला की पहाड़ियों में स्थित है। इस पहाड़ी क्षेत्र को स्थानीय भाषा में होड़ा पर्वत के नाम से पहचाना जाता है। क्षेत्र में प्रचलित मान्यता के अनुसार इस मंदिर में मेवाड़ महाराणा प्रताप द्धारा भी पूजा-अर्चना की जाती थी। आशुतोष भगवान गुप्तेश्वर की मूल प्रतिमा होड़ा पर्वत की एक सर्पिलाकार गुफा में स्थित है। प्राचीन युग में इस गुफा को सुआ गुफा के नाम से पहचाना जाता था। होड़ा पर्वत पर स्थित सुआ गुफा कई तेजस्वी संतों यथा - फूलनाथ जी, बृजकिशोर जी, फलाहारी बाबा आदि की तपोस्थली रही है। गुप्तेश्वर महादेव मंदिर तितरड़ी का जीर्णोद्धार स्थानीय समुदाय के सहयोग से श्री बृजबिहारी जी द्धारा यहाँ मूल मंदिर में शिव परिवार और सुआ गुफा के बाहर हनुमान मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न करवायी गई। उन्हीं के आदेश पर तितरड़ी गाँव के स्थानीय निवासियों द्धारा मंदिर में मुलभूत आवश्यकता की विविध सामग्रीयों की व्यवस्था करवाई जिनमें जलकुण्ड, बर्तन भंडार, भोजनशाला, जल हेतु टंकियो की व्यवस्था, दो मंजिला आश्रम भवन, ट्यूबवेल आदि उल्लेखनीय है। यहाँ की प्राकृतिक रमणियता देशी-विदेशी पर्यटकों और प्रकृति प्रेमियों को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित करती है। सावन और भाद्रपद माह में यहाँ सदैव मेले जैसे माहौल बना रहता है। धार्मिक पर्यटन में रूचि रखने वाले व्यक्तियों के लिए मेवाड़ का उक्त मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय है।[24]

झामेश्वर महादेव (झामर कोटड़ा) – अरावली पर्वत श्रृंखला की उत्पतयकाओं में उदयपुर जिला मुख्यालय से लगभग 25 किलोमीटर की दुरी झामर कोटड़ा माईन्स के निकट झामरी नदी के तटीय प्रदेश में स्थित झामेश्वर महादेव नामक धार्मिक स्थल सैलानियों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र है। यहाँ चारो ओर पहाड़ियों और कलकल करती नदी के निकट स्थित एक पहाड़ी कंदरा में भगवान झामेश्वर की स्वयंभू प्रतिमा अवस्थित है। यहाँ की एक मुख्य विशेषता प्राकृतिक जल से भगवान का सदैव होने वाला अभिषेक है जो गुफा की चट्टानों से स्वत: ही प्रस्फुटित होता रहता है। यह मंदिर स्थानीय लोगों सहित सैलानियों की धार्मिक आस्था का प्रधान केन्द्र है। पहाड़ियों से उत्पन्न जलप्रपात बहती नदी की धारा प्राकृतिक जीवों का विचरण और नैसर्गिक सौन्दर्य इस मंदिर को विशिष्ट बनाता है। वर्षा ऋतु में यहाँ का दृश्य देखते ही बनता है। यह क्षेत्र अपनी भौगोलिक और भौतिक सरंचना चट्टानों के लिए भी प्रसिद्ध है। कई विदेशी अध्येता यहाँ शोधकार्य करने आ चूके है। इस स्थल को क्षेत्रीय लोग जुंबक ऋषि की तपोभूमि स्वीकार करते है। झामेश्वर महादेव परिसर में प्रतिवर्ष वैशाख पूर्णिमा पर विशाल मेला भरता है जो किसी आदिवासी कुम्भ मेले जैसा प्रतीत होता है। इस मेले में वनवासी लोग रंग-बिरंगी पताकाऐं लेकर आते है और सम्पूर्ण रात्रि भगवान शिव की पूजा अर्चना भजन गुणगान करते है। मान्यता है कि यहाँ भगवान शिव भक्तों की हर मनोकामना को पूर्ण करते हैं।[25]

मंदिर परिसर के बाहरी भाग में एक गोमुख निर्मित है जिससे अनवरत् जलधारा बहती रहती है। यही जल भगवान के अभिषेक और पूजन में भी प्रयुक्त होता है। गोमुख के सामने एक छोटा सा आश्रम बना है जो मूल रूप से संतो की धूणी है। यही पास में राम भक्त हनुमान का छोटा किन्तु सुन्दर मंदिर भी स्थित हैं। पर्यटकों की सुविधा के लिए यहाँ की मंदिर ट्रस्ट द्धारा कई

धर्मशालाओं, पटसालों, चबुतरों का निर्माण भी करवाया गया है। मंदिर से लगभग 400 मीटर की दूरी पर एक प्राकृतिक झरना अवस्थित है। कुल मिलाकर यह मंदिर धार्मिक आस्था के साथ-साथ उदयपुर जिले का मुख्य पर्यटक स्थल (पिकनिक स्पॉट) के रूप में विख्यात हो चुका है। जहाँ मेवाड़ परिक्षेत्र के लोग प्राय: विविध धार्मिक आयोजनों के उद्देश्य से प्राय: एकत्रित होते रहते हैं।[26]

अमरख जी महादेव – उदयपुर-नाथद्वारा मार्ग पर शहर से लगभग 8-10 किलोमीटर की दूरी पर अरावली पर्वतमाला में स्थित चिरवा पहाड़ी की तलहटी में अमरख जी महादेव का मंदिर अवस्थित है। चिरवा घाटी के मार्ग पर यह मंदिर नेशनल हाईवे से 2 किलोमीटर अन्दर की ओर है। यह दो किमी का घुमावदार मार्ग पर्यटकों को प्राकृतिक रमणीयता का पूरा आनन्द प्रदान करता है। मंदिर परिसर के बाहरी भाग में सामान्य से कुछ ऊँची भूमि पर एक जलकुण्ड विद्यमान है, जिसे माँ गंगा कुण्ड के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इस कुण्ड के निर्मल जल की यह विशेषता है कि अथाह गर्मी और अकाल में भी इसका जल नहीं सूखता है। वर्ष पर्यन्त इसका जल बहता रहता है। यही कुण्ड के निकट छोटी पहाड़ी पर बाबा अमरख महादेव का अतिप्राचीन मंदिर स्थित है। जिसमें अमरख महादेव का सफेद संगमरमर चतुर्भुज शिवलिंग प्रतिष्ठित है। इस मंदिर के निकट विशाल नन्दी की श्वेत प्रतिमा भी दर्शनीय है। मूल देवालय के पास ही दो अन्य मंदिर भी निर्मित है जिनमें माँ शक्ति भगवान कार्तिकेय और गणेश की प्रतिमाऐं स्थापित है। मंदिर का इतिहास लगभग 2500 वर्ष प्राचीन माना जाता है जिसका प्रमाण यहाँ लगे शिलालेख से प्राप्त होता हैं। मंदिर के निकट ही संतो का आश्रय स्थल भी बना हुआ है। इस मंदिर की स्थापत्य और वास्तुकला मेवाड़ की शिल्पकला की विशेषताओं को उजागर करती है। यही पहाड़ी के नीचे की ओर एक और छोटा शिव मंदिर भी स्थित है, जिसमें भगवान शिव अपने परिवार सहित विराजित है। शिव मंदिर परिसर में ही रामभक्त हनुमान की प्रतिमा भी स्थापित है। इस मंदिर के ठीक बाहर की और सदा नीरा माँ गंगा की जलधारा बहती रहती है। यही विविध धार्मिक क्रियाकलापों और अनुष्ठानों के लिए हवनकुण्ड और अन्य व्यवस्थाऐं भी विद्यमान है।[27]

केदारनाथ मंदिर (उदरी गाँव) – उदयपुर जिले की नाई ग्राम पंचायत में स्थित उदरी गाँव एक अतिप्राचीन शिव मंदिर स्थित है, जो लोगों की धार्मिक आस्था और विश्वास का मुख्य केन्द्र है। जिसे उन्दरी गाँव का केदारनाथ मंदिर के नाम से सम्बोधित किया जाता है। यह मंदिर अरावली पर्वत श्रृंखला की एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है। इसके चारों ओर पहाड़ी परिक्षेत्र में छोटे-छोटे ग्यारह अन्य शिव मंदिर भी बने हुए है जो इसके परिक्रमा मार्ग में आते है। क्षेत्रीय लोग इन मंदिरों को 12 ज्योर्तिलिंग की साम्यता प्रदान करते है। इस मंदिर परिक्षेत्र में प्रतिवर्ष शिवरात्रि पर्व पर विशाल मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें श्रृद्धालू दूर-दूर के क्षेत्रों से आते है।[28]

पशुपतिनाथ महादेव (धोलागढ़ झल्लारा) – उदयपुर जिले की झल्लारा पंचायत समिति में स्थित गाँव धोलागिर में पशुपतिनाथ महादेव का अति प्राचीन मंदिर कनेर के निकट धौलागढ़ पर्वत की तलहटी में अवस्थित है। यहाँ भगवान महादेव अष्टमुखी स्वरूप में विराजमान है। क्षेत्रीय मान्यता के अनुसार यह अष्टमुखी मुखारविन्द विश्व का सबसे बड़ा शिवलिंग है। जिसकी ऊँचाई लगभग सवा नौ फिट के आस-पास मानी जाती है। इस प्रतिमा से पूर्व मध्यप्रदेश के मन्दसौर के पशुपतिनाथ की प्रतिमा 7¼ फीट और नेपाल के पशुपतिनाथ की प्रतिमा 5½ फीट सबसे बड़ी प्रतिमाओं में गिनी जाती थी। धोलागढ़ के इस अष्टमुखी शिवलिंग की प्रधान विशेषता इसका आठ रूपों वाला स्वरूप है। जिसमें चार रूप ऊपर और चार रूप प्रतिमा के निचले भाग में विद्यमान है। यह मंदिर समुद्रतल से लगभग 1600 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। इस मंदिर का निर्माण रूद्रवाहिनी संघ के महंत योगी प्रकाशनाथ के सानिध्य में सम्पन्न हुआ है। यह मंदिर अरावली की रमणीय घाटियों में बना है जो पर्यटकों का मन मोह लेती है। प्रत्येक ऋतु में यहाँ का प्राकृतिक नजारा अलग-अलग परिदृश्य प्रस्तुत करता है। क्षेत्रीय मान्यता है कि लोक संत मावजी द्वारा चोपड़ा की रचना भी इसी धोलागढ़ पर्वत पर की गई थी। यहाँ रूद्र वाहिनी संघ के महंतो की धूणी और आश्रम भी विगत 12 वर्षो से विद्यमान है। यद्यपि यह मंदिर अत्यन्त विकट मार्ग पर स्थित है। जहाँ पहुँचने के लिए 2-3 घण्टे की चढ़ाई चढ़नी पड़ती है तथापि प्रकृति प्रेमियो, धार्मिक आस्था वाले लोगों और पर्यटकों को यह बाधाऐं रोकने में असमर्थ है, यहाँ बड़ी संख्या में पर्यटकों का आवागमन होता रहता है।[29]

नान्देश्वर जी महादेव – उदयपुर जिले की नाई ग्राम पंचायत में स्थित श्री नान्देश्वर महादेव मंदिर ना केवल धार्मिक अपितु अपने पौराणिक महत्तव के कारण भी विशेष महत्तव रखता है। इस मंदिर के प्राचीन समय में नारदेश्वर के नाम से जाना जाता था। उदयपुर जिला मुख्यालय से लगभग 20 किमी दूर स्थित इस मंदिर के सम्बन्ध में कहा जाता है कि स्वयं महर्षि नारद द्वारा यहाँ तपस्या की गई थी। इस मंदिर में प्राकृतिक वातावरण के मध्य एक स्वयंभू शिवलिंग विद्यमान है। जिसकी पूजा अर्चना सदियो से होती आ रही है।

मंदिर के इतिहास के संदर्भ में मान्यता है कि इसका जीर्णोद्धार मेवाड़ महाराणा कर्ण सिंह के शासनकाल में वि.सं. 1684 के आसपास किया गया था। तत्पश्चात यहाँ की व्यवस्थाऐं संत गिरी द्वारा की गई। मंदिर परिसर में एक अत्यन्त मनमोहक कुण्ड भी बना है, जिसका जल कभी समाप्त नहीं होता है। क्षेत्रीय मान्यता है कि इसके जल से विविध प्रकार की व्याधियों का शमन होता है। यहाँ के पुजारी श्री विनोद जी के अनुसार नारद ऋषि ने अपने श्राप से मुक्ति के लिए इस स्थान पर तपस्या की थी। यहाँ प्रत्येक सोमवार महाशिवरात्रि और सावन माह में बड़ी संख्या में श्रृद्धालु और पर्यटक दर्शनार्थ आते रहते हैं।[30]

नान्देश्वर मंदिर का हरियाली और नैसर्गिक सुन्दरता से युक्त वातावरण इसे एक तीर्थ क्षेत्र के समान स्थान प्रदान करवाता है। यहाँ का माहौल अत्यन्त शांत और आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण जान पड़ता है। यह मंदिर अद्भुत स्थापत्य शिल्प का नमूना भी माना जाता है। जिसके प्रवेश द्वार पर दो हाथी खड़े हुए है। मंदिर परिसर में ही यहाँ तपस्या करने वाले तीन संतो की जीवित समाधियाँ भी विद्यमान है। जो संत राजगिरी और संत अमरगिरी बर्फानी की बताई जाती है। जो क्रमश: 1964 और 2009 में इन संतो के जीवित समाधि लेने पर बनाई गई थी। मंदिर परिसर में ही भगवान राम-लक्ष्मण और माता सीता का एक अन्य मंदिर और एक अन्य शिवालय भी स्थित है।[31]

मंदिर के निकट आरण्य पर्वत अवस्थित है, जहाँ सोमवती अमावस्या को 12 कोसी परिक्रमा का आयोजन किया जाता है। जो क्षेत्रवासियों में विशिष्ट महत्त्व रखती है। यह परिक्रमा नान्देश्वर मंदिर से प्रारम्भ होकर केदारनाथ मंदिर उन्दरी गाँव सहित बारह ज्योर्तिलिंगों से होती हुई पुन: नान्देश्वर मंदिर पर समाप्त होती है। यही मंदिर के निकट एक छोटी सुन्दर झील भी बनी है, जिसे नान्देश्वर चैनल के नाम से पहचाना जाता है। यह झील सीसारमा नदी के माध्यम से उदयपुर की पिछोला झील को जल पहुँचाती

है। इस क्षेत्र में अवस्थित यह झील और सीसारमा नदी यहाँ पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र है।[32]

कमलनाथ महादेव – राजस्थान के उदयपुर जिले में 80 किमी दूर झाड़ोल पंचायत समिति के आवरगढ़ की पहाड़ियों में स्थित यह एक अत्यन्त प्राचीन शिव मंदिर है। जिसे स्थानीय लोग कमलनाथ महादेव के नाम से संबोधित करते है। इस मंदिर के संदर्भ में पुराणों में आख्यान मिलता है कि इस मंदिर की स्थापना स्वयं लंकापति रावण द्वारा की गई थी, यहाँ शिव से पहले रावण की पूजा का विधान भी देखने को प्राप्त होता है। मंदिर के नामकरण के संदर्भ में क्षेत्रीय लोगों का कहना है कि रावण द्वारा भगवान शिव को 108 कमल पुष्प अर्पित करने का प्रण लिया गया था किन्तु पूजा में एक पुष्प कम होने पर रावण ने अपना शीश भगवान शिव को समर्पित कर दिया था। जिससे प्रसन्न होकर आशुतोष महादेव शिव ने रावण की नाभि में अमृत कुण्ड स्थापित किया था और उसे दस शीशों का वरदान भी दिया। यहाँ स्थित शिवलिंग के संदर्भ में एक मान्यता यह भी है कि एक ग्वाले की गाय प्रतिदिन शिवलिंग पर स्वत: ही दूध चढ़ाती थी जब ग्वाले ने यह क्रिया प्रतिदिन देखी तो क्रोधित होकर उसने शिवलिंग पर कुल्हाड़ी से वार किया जिससे यह मध्य भाग से कट गया तभी से यहाँ खण्डित शिवलिंग को पूजा जाता है। मंदिर में एक गोमुख बना है, जिससे सदा जलधारा बहती रहती है। यहाँ आदिवासी समुदाय के लोग वैशाख माह में पूर्वजों की अस्थियों को विसर्जित करने आते हैं अत: इसे आदिवासियों का हरिद्वार भी क्षेत्रीय जनता द्वारा कहा जाता है।

अरावली पहाड़ियों की गोद में स्थित इस मंदिर तक जाने के लिए पर्यटकों को 3 किलोमीटर का पैदल यात्रा तय करना पड़ता है। उनकी यह पैदल यात्रा जहाँ रोमांचक है वहीं प्रकृति को निकट से देखने का अनोखा अनुभव भी प्रदान करती है। इस पैदल मार्ग के मध्य भाग में भगवान शनिदेव का मंदिर भी अवस्थित है। इस स्थान का ऐतिहासिक महत्तव महाराणा प्रताप की शरण स्थली होने के कारण भी है। क्षेत्र में प्रचलित किवंदतियों के अनुसार अपने मेवाड़ निर्वासन काल में महाराणा प्रताप द्वारा 1577 ई. में यहाँ होली जलाने की रस्म अदा की गई थी। तभी से आदिवासी समुदाय प्रतिवर्ष यहाँ होली जलाने की परम्परा को सम्पन्न करता आ रहा है। मान्यता है कि मंदिर में शिव पूजन से पहले यदि रावण की पूजा नहीं कि जावे तो सम्पूर्ण पूजा-अर्चना व्यर्थ चली जाती है।[33]

कुकड़ेश्वर महादेव – उदयपुर जिला मुख्यालय से 12 किलोमीटर की दूरी पर लखावली गाँव में स्थित अरावली पर्वत श्रृंखला की तलहटी में चारों ओर से पहाड़ियों के मध्य कुकड़ेश्वर महादेव मंदिर स्थित है। जो पर्यटन और धार्मिक विश्वास का अद्धितीय संगम है। क्षेत्रीय मान्यता के अनुसार यह मंदिर लगभग 580 वर्ष प्राचीन माना जाता है जहाँ किसी समय में मेवाड़ महाराणा प्रताप द्वारा अपना निर्वासित जीवन व्यतीत किया गया था। क्षेत्र में मान्यता है कि महाराणा प्रताप के निर्वासन काल में महाराणा प्रताप एक मंदिर में विश्राम कर रहे थे तभी मुगलों ने उन पर हमला कर दिया। इस समय एक मुर्गे ने बांग देकर प्रताप को निन्द से जगाया था। तभी से यह मंदिर कुकड़ेश्वर महादेव के नाम से सम्बोधित किया जाने लगा क्योंकि मेवाड़ में स्थानीय भाषा में मुर्गे का कुकड़ा कहा जाता है। प्रारम्भिक स्तर पर यहाँ प्रकट हुए शिवलिंग मुर्गे के अण्डे के आकार के थे। जो संख्या में पाँच एक साथ बताये जाते है। वर्तमान में प्राकृतिक हलचलों के साथ-साथ ये आकार में बढ़ते प्रतीत होते है। मंदिर परिसर के सम्मुख एक नाला बहता है, जिसका जल कभी समाप्त नहीं होता है। इसी के जल से भगवान शिव का नित्य अभिषेक होता है। मंदिर परिसर में भगवान गणेश, कार्तिकेय, माता पार्वती और हनुमान की प्रतिमाऐं भी अवस्थित है। यहाँ प्रतिवर्ष सावन के सोमवार, शिवरात्रि और गुरू पूर्णिमा पर मेला लगता है। मंदिर परिसर में साधु संतो की धूणी भी विद्यमान है। यहाँ की पूजा-अर्चना का दायित्व संत श्री मोहन गिरी द्वारा सम्पन्न किया जाता था। मंदिर परिसर में पर्यटकों के आराम हेतु कुछ कक्ष, भोजनशाला आदि की व्यवस्था विद्यमान है। मंदिर के पीछे की ओर कुछ दूरी पर साधु सन्यासियों की समाधियाँ भी बनी हुई है। अपनी प्राकृतिक मनमोहक छटाओं के कारण यह स्थल स्थानीय और विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है।[34]

कुण्डेश्वर महादेव – उदयपुर जिला मुख्यालय से 32 किमी की दूरी पर मेवाड़ परिक्षेत्र में स्थित कुण्डेश्वर महादेव धार्मिक स्थलों में सम्मिलित है। मान्यता है कि यह मंदिर कई सौ वर्षो प्राचीन है। मंदिर के परिसर में एक शिलालेख लगा है जो 2000 वर्ष पूर्व यहाँ परमार शासकों के शासन होने का प्रमाण प्रदान करता है। यह स्थल पूर्वकाल में कई साधु सन्यासियों और तपस्वियों की पुण्य स्थली का साक्षी है। मूलत: मेवाड़ के कुण्डा ग्राम में स्थित होने के कारण इसे कुण्डेश्वर महादेव के नाम से सम्बोधित किया जाता है। मंदिर तक पहुँचने के लिए घसियार स्थित श्रीनाथ मंदिर के ठीक सामने से एक पक्का सड़क मार्ग बना हुआ है। जो अरावली की सुन्दर पहाड़ियों से होकर गुजरता है। जिसके मार्ग में कई स्थानीय गाँव बसे है, जो ग्रामीण जीवन की झाँकी प्रस्तुत करते है। मंदिर के गर्भगृह में विशाल शिवलिंग और नंदी बाबा स्थापित है। जीर्णोद्धार के कारण यह मंदिर अपनी प्राचीनता खो चुका है। यहाँ की उल्लेखनीय बात यह है कि सम्पूर्ण मंदिर एक ही बरगद के वृक्ष के नीचे बना हुआ है। जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि स्वयं आशुतोष भगवान ने अपने ऊपर बरगद को छत्र के रूप में धारण कर रखा है। शिव मंदिर के बाहर आंगन में छोटी-बड़ी कई देव प्रतिमाऐं स्थापित है, जिनमें शिव, गणेश, पार्वती आदि प्रमुख है।[35]

मंदिर के सम्मुख ही बाहरी क्षेत्र में सदा नीरा माँ गंगा की जलधारा विद्यमान है जो आगे जाकर मनमोहक झरने के रूप में परिवर्तित हो जाती है। मान्यताओं के अनुसार यहाँ माता गंगा मेवाड़ की कृष्ण भक्त मीराबाई के पूज्य गुरूदेव रविदास जी के अनुनय विनय पर से प्रकट हुई थी। इसलिए क्षेत्रीय लोग इसे गंगा जी का चौथा पाया मानते है। क्षेत्र के जो आदिवासी अपने पूर्वजों के अस्थि विसर्जन के लिए हरिद्वार जाने में असमर्थ है वो यही पर अस्थि विसर्जन की परम्परा को सम्पन्न करते है। इस कार्य हेतु यहाँ कुछ घाट भी बने हुए है। मंदिर से कुछ दूरी पर लगभग सभी सम्प्रदायों के माता जी के थानक और नागदेवता के देवरे बने हुए हैं।[36]

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. भारद्वाज कमल : प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत का इतिहास, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021, पृ. 140-141
2. धर्म मेरियम वेबस्टर के लेख धर्म की परिभाषा से उद्धत 12 मार्च, 2021
3. बनर्जी ए. सी. : राजपूत अध्ययन गुहिलों का प्रारम्भिक इतिहास।
4. एर्स्किन : राजपूताना गजेटियर, भाग-II A, पृ. 26-27
5. पोखरियाल संजय : पौराणिक कथाओं में भगवान शिव दैनिक भास्कर, उदयपुर, संस्करण 13 नवम्बर 2017 से उद्धत।
6. शर्मा हिमांशु : भगवान शिव के गुणों को अपनाएंगे राजस्थान पत्रिका,

उदयपुर संस्करण, 24 फरवरी 2020 से उद्धत।
7. रूद्राष्टाध्यायी पृष्ठ संख्या 10 गीता प्रेस, गौरखपुर।
8. पाण्डेय अजीत कुमार (सम्पादक) : भारतीय इतिहास, समसामयिक घटना चक्र, इलाहाबाद, 2025, पृ. B 90-91
9. मांगलिक रोहित : विचारों का इतिहास, एड्यु गौरिला पब्लिकेशन्स्, नई दिल्ली, 2024, पृ. 155
10. व्यास गोपाल वल्लभ : प्रारम्भिक मेवाड़ का इतिहास, हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर, 2016,पृ. 30-31
11. जोशी राधेश्याम : राजस्थान दर्शन, प्राईम प्रकाशन, भीलवाडा , पृ. 20
12. शर्मा जुगल किशोर : पुण्यभूमि भारत मानचित्र परिचय सुरूचि प्रकाशन जयपुर, 2013, पृ. 50
13. मांगलिक रोहित : भारत का इतिहास VII (1605-1750),एड्यू गौरिला पब्लिकेशन्स्, नई दिल्ली, 2024, पृ. 197
14. शर्मा धर्मपाल : मेवाड़ की संस्कृति और परम्परा, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर, 2016, पृ. 1-2
15. व्यास गोपाल वल्लभ : पूर्वोक्त, पृ. 31
16. (1) श्यामलदास : वीर-विनोद भाग - 1, मयंक प्रकाशन 1986, पृ. 143
(2) शर्मा धर्मपाल : मेवाड़ संस्कृति एवं परम्परा, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर, 1999, पृ. 1-2
17. ओझा गौरीशंकर हिराचन्द : उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग-1, संस्करण-2, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2006, पृ. 32
18. सिंह राजबहादुर : मंदिर संस्कृति, राज पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, पृ. 314
19. राठौड़ भूपेन्द्र सिंह : मध्यकालीन राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थल, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2014, पृ. 91-92
20. गुप्ता मोहनलाल : राजस्थान जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2009, पृ. 86-87
21. राणावत ईश्वरसिंह : उभयेश्वर महादेव, प्रकाशक उभयेश्वर मंदिर विकास समिति, उदयपुर, 2000, विविध पृष्ठ।
22. दाधीच मनोज एवं पालीवाल राहुल : मेवाड़ सर्किट में पर्यटन का विकास एक विश्लेषणात्मक अध्ययन,किताब राईटिंग पब्लिकेशन्स्, मुम्बई, 2023,पृ. 172-173
23. (1) राणावत मनोहरसिंह एवं राणावत ईश्वर सिंह : मेवाड़ का सामाजिक सांस्कृतिक इतिहास, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर, 2006, पृ. 152
(2) पुरोहित देवनाथ : उदयपुर भूपाल मुद्रण मंत्रालय, उदयपुर, संवत् 1987, पृ. 60
24. राजस्थान पत्रिका 21 जुलाई 2025 उदयपुर का अमरनाथ ..... गुप्तेश्वर महादेव मंदिर, अक्षिता देवड़ा के लेख से उद्धत।
25. राठौड़ भूपेन्द्र : पूर्वोक्त, पृ. 28-29
26. (1) मंदिर में प्रतिष्ठित शिलालेख के अनुसार
(2) राजस्थान पत्रिका समाचार पत्र 11/09/2008, पृ. 5
27. (1) https://udaipurblog.com
(2) खोटा सिक्का ऑनलाईन न्यूज पेपर, 12 जुलाई, 2015 के लेख अमरख महादेव (उदयपुर, राजस्थान) से उद्धत।
28. राजस्थान पत्रिका समाचार पत्र 1 अगस्त 2023 के लेख भगवान शिव को समर्पित उदयपुर के प्रमुख शिव मंदिर लेख से।
29. सिंह मधुलिका के राजस्थान पत्रिका समाचार पत्र में प्रकाशित लेख से उद्धत दिनांक 11 मार्च 2021 'उदयपुर में भी है, अमरनाथ, केदारनाथ और पशुपतिनाथ मंदिर'।
30. हिन्दुस्तान खबर समाचार-पत्र जुन 19, 2025 में प्रकाशित लेख उदयपुर में स्थित इस महादेव मंदिर में नारद मुनि ने की थी तपस्या लेख से उद्धत।
31. पूर्वोक्त
32. राठौड़ निशा के न्यूज 18 (हिन्दी) में 21 मई 2025 को प्रकाशित लेख जहाँ नारद मुनि ने की थी तपस्या वही प्रकट हुए भगवान शिव आज भी मौजूद है, अद्भुद शिवलिंग से उद्धत।
33. शर्मा विमलेश : सर्व विप्र मार्तण्ड, पत्रिका जुलाई 2020 वर्ष 3, अंक-10, जयपुर 2020, पृ. 13-14
34. चौहान नंदिनी 7 मार्च 2024 के उदयपुर पत्रिका में प्रकाशित लेख से उद्धत। (महाशिवरात्रि विशेषांक)।
35. न्यूज 18 हिन्दी 21 जुलाई 2023, राठौड़ निशा के लेख से उद्धत। कुण्डेश्वर महादेव जहाँ राजा ने किया शीशदान।
36. पूर्वोक्त

****